श्रीहित रूपवाणीमाला का षष्ठ पुष्प

श्री राधावल्लभो जयति । श्रीहित हरिवंशचन्द्रो जयति ।।

श्री मंगल विनोद वेली

अर्थात्

प्रातः काल नींद खुलते ही भावना करने योग्य ध्यान

व्रज भाषा में चार लक्ष पद निर्माता

चाचा श्रीहित वृन्दावनदासजी

कृत

www.RadhaVallabhMandir.com

www.RadhaVallabhMandir.com

परम आराध्य श्री राधाबल्लभलाल जी

वृन्दावन

।।श्रीहित राधावल्लभो जयति ।।

।।श्रीहित हरिवंश वंशो जयति ।।

अथ मंगल विनोद वेली ।

नमामि श्री हरिवंश कृपा अंबुद वरषौ जग ।
श्री राधा रस रहसि गूढ दरसाय दियौ मग ।।१।।

नमामि राधाचरन सकल मंगल कौ कारन ।
नमामि श्री हित रूप सेव्य गौरांग बिहारिन ।।२।।

नमामि रसिकानन्द प्रिया आनन अंबुज अलि ।
नमामि ललिता ललित रूप रस बेलि महाफलि ।।३।।

नमामि सहचरि वृंद सदा सेवत राधा पद ।
नमामि वृंदारण्य अखिल कौतुक कौ बेहद ।।४।।

नमामि दिनमणिसुता तीर सोभा कौ संघट ।
नमामि सब सुख निकर बेलि तरु बर वंशीवट ।।५।।

नमामि वृंदादेवि सुभग कानन अधिकारी ।
नमामि खगकुल वृंद जहाँ सन्तत सुख भारी ।।६।।

नमामि थिर चर जिते कुँवरि आज्ञा अनुवरती ।
नमामि पद सुकुमार दैन सुख जिहिं वन धरती ।।७।।

नमामि जे बन रसिक बसत इहिं भजन सहायक ।
नमामि जहाँ जहाँ लसत विपिनरानी यश गायक ।।८।।

नमामि वह तरुकलप कोटि रवि शशि दुति टारत ।
नमामि क्रीडा रास हेत बहु सुख विस्तारत ।।९।।

नमामि राधा इष्ट मिष्ट यश रसना गाऊं ।
नमामि श्रीपदपद्म परागहि सादर पाऊं ।।१०।।

www.RadhaVallabhMandir.com

प्रथम भाव तन बदलि करहु अपु वपु जु अलंकृत ।
श्री व्याससुवन परसाद देह मानसी गडै चित ।।११।।

अनुगत गुरु अलि यूथ...होहि अस सेवा लायक ।
ललितांदिक रूचि माँहि रलै प्रेम सु भायक ।।१२।।

निपट भुरहरें अलीं युगल मुख देखन लोभा ।
लगीं रन्ध्र मग जाय जहाँ बरषत अति शोभा ।।१३।।

सिज्या भवन सुदेश झूमि रहीं ललित लतागन ।
कुसुकमत नानाभाँति कलपतरु पाँति बनी बन ।।१४।।

मणिकंचन मय रचित हरति दर्पणद्युति धरनी ।
अस कछु अचरज रूप रमा हू कौ मनहरनी ।।१५।।

पौढे राधालाल सुरत रन श्रमित कछुक तन ।
भोर लगे दृग पलक प्रेम आवेश भरे मन ।।१६।।

गाढ गसनि अंग अंग विविध भूषन कच उरझनि ।
पुनि निद्रावश भये होय कहि कहिं विधि सुरझनि ।।१७।।

उससि उससि पट तानत शीतल मारुत परसत ।
त्यौं त्यौं आलस दहलत मिलि दुहुँ तन द्युति दरसत ।।१८।।

मननि बलैयां लेत भींजि रहीं तत्सुख सहचरि ।
चिन्तति सुखद उपाय हेत मूरति मनु बहु धरि ।।१९।।

कोऊ परम प्रवीन बीन रसलीन बजावति ।
कोऊ राग रुचि सुघर विभासहिं मधुरें गावति ।।२०।।

कोऊ कर लै मणिपिंजरा सारो शुकनि पढ़ावति।
राधा मोहन उच्चरत सब मन मोद बढ़वति।।२१।।

मृदु मृदंग धुनि रोचक कोऊ झांझनु झंकारति ।
धरें तँबूरा अंकनि काउ तारनि टंकारति ।।२२।।

कोऊ इक कर कठतार कोऊ मुँहचंग रंग रुचि ।
कोऊ इक स्वर सारंगी में गति लेत परम शुचि ।।२३।।

www.RadhaVallabhMandir.com

नाद स्वाद श्रवननि पथ परत कलमले दम्पति ।
सखिनु नयन अरबरे निहारन प्राणनि सम्पति ।।२४।।

तब ललिता रचि तान भेद भाइनु गति लीनी ।
चौंकि परे श्रुति नाद रसिक अति सुख मति भीनी ।।२५।।

भैरौं ललित विभास गुज्जरी रामकली पुनि ।
देवगिरि गंधार राग अनुराग भरे सुनि ।।२६।।

चिक उठाय मणिमन्दिर गवनी जब हितसजनी ।
भूरि बलैयाँ लेत चरन चांपत सुख भजनी ।।२७।।

आलस भर रसमसे खुलि गये लोचन लौनैं ।
बेधत मरम मनोभव छबियुत ढरत सु कौनैं ।।२८।।

कहा कहौं सलज उठत सज्या तैं दूलहु दुलहिनि ।
निशाजनित सुख सूचत नव वयसन्धि जु उलहिनि ।।२९।।

परे दुहुंनि मन जाय गहर निशि रस के चसके ।
घूमत लोचन चारु वृत्ति चित की उत धसके ।।३०।।

पलटि परे पट भूषन उन्मद नाहिं सम्हारत ।
देखि प्रेम की दशा सखीजन सर्वसु वारति ।।३१।।

जावक मंडित भाल पीक रंजित कछु पलकनि ।
सुरतयुद्ध खुलि रहीं अमित छबि छलकत अलकनि ।।३२।।

जनु रवि द्युति ताटंक दिपत रदछत जु कपोलनि ।
धीर कीर उड़ ग्रसित नासिका जलसुत डोलनि ।।३३।।

विथुरी मोतिनु मांग चिकुर कुंकुम छवि रेलत ।
मानों राती निशा मगन तारागन खेलत ।।३४।।

छवि आगर चंद्रिका ढरकि अस ओप दई है ।
मदन विजय करि ध्वजा मनहुँ सुख भार नई है ।।३५।।

सीसफूल की सरकनि ढरकनि अस छवि छाजै ।
मनहुँ धुजा उर तें कढि फूलि धरे वपु राजै ।।३६।।

www.RadhaVallabhMandir.com

पलकिन पर सुख खलकनि रेखा सोभित मखिरी ।
मनु मधुपनि के बोझ नैचली कमलनि पखुरी ।।३७।।

टूटी सीपज दाम हियें लर लटकि रही है ।
मनु कंचनगिरि बीच सुरसरी धारं वही है ।।३८।।

श्यामपोत की जोति जलजमणि मिलि उझली है ।।
सिंधु वेधनी मनहुँ तरनिजा धार चली है ।।३९।।

पुनि विद्रुममणिमाल परम कौतुक छवि दैनी ।
उभय मध्य सरस्वती लसति मनु प्रगट त्रिवैनी ।।४०।।

प्रातकाल नव बाल लाल ढिंग ललित बनी है ।
सिथल भये सिंगार सतगुनी छबि उफनी है ।।४१।।

रमी अधर मृदु हास परम सोभित अति आनन ।
अस कछु किरनि उदोत तिमिर टारत सब कानन ।।४२।।

प्रेम रूप रस रंग भरी बैठी वर भामिनि ।
मनहूँ सजल घन अंक उरझि थिर ह्वै रही दामिनि ।।४३।।

श्याम सुभग शिर पाग ह्वै रहे पेंच सु ढीले ।
बर बस प्राननि हरत सखी मनु मंत्रनि कीले ।।४४।।

गाढ मिलनि साँवल अँग लागत अधिक सुहाये ।
ललना तनु मणिभूषन चिन्ह उपटि ये आये ।।४५।।

प्रिया गरे कौ हार पहिरि पिय संभ्रम लीयौ ।
देखि सखी किहिं भाँति चैंन मो नयननि दीयौ ।।४६।।

अजहुँ न करत सँभार लाल तनु ओढ़ैं सारी ।
हौं बलि प्रेमी रसिक कुँवर की भूलनि प्यारी ।।४७।।

वे चकोर ये चंद चंद पुनि वे चकोर गति ।
रहे परस्पर दहलि सिंधु सुख पैरति विवि मति ।।४८।।

पहपीरी की फूलनि कुसुमन अलिगन झूलनि ।
चहुँके वन खग वृंद श्रवण सुनि सुख अनुकूलनि ।।४९।।

www.RadhaVallabhMandir.com

चौंकि परे दोउ रसिक देखि पंछीनु कलोलनि ।
समुझि समझि मुस्कात कछुक मधुरी सी बोलनि ।।७०।।

अपने अपने वसन आभरन बदलत दोऊ ।
हार बार सुरझावति प्रिय सहचरि ढिंग कोऊ ।।७१।।

लटकि लटकि पग धरत कछुक डगमगत भरे सुख ।
निधनी ज्यों धन पाय सखी निरखत सुंदर मुख ।।७२।।

कोऊ सखि सिंहासन अपने करनि रचति हैं ।
कोऊ कुसुमनि दल लै लै नीकी भाँति सचति हैं ।।७३।।

कोऊ सादर बैठारति कोऊ लाई जल झारी ।
कोऊ बदन मज्जन करवावति अति हितकारी ।।७४।।

लियौ लाल रूमाल नेह रूचि अपने पानन ।
प्यारी बदन अँगौछि बहुरि पोंछत अपु आनन ।।७५।।

मिश्री माखान सहित मिष्ट दधि रूचिर मलाई ।
मंगल समय विचारि हितू सजनी लै आई ।।७६।।

एक राग रूचि जानि जील स्वर ऐसैं गहकी ।
मूतमंजरी चाखि कोकिला मानहुं पहकी ।।७७।।

एक ग्रास मुख देति लडैंती मोहन सोहन ।
एक हांसि कै वचन कहति कछु मोरति भोंहन ।।७८।।

रसिक रसिकनी भोर भूरि भोजन विधि करिकैं ।
जल सुंगाधि परि पान रुचिर बीरी मुख धरिकैं ।।७९।।

रोचक झालरि नाद विविध कल बाजे बाजत ।
सुनि धाई अलि यूथ प्रेम भरि आरति साजत ।।८०।।

चौंर चारू फहरात दुहूं दिशि सुमुखी ढारति ।
करि कपूर वर्तिका नेह आरती उतारति ।।८१।।

www.RadhaVallabhMandir.com

परम आराध्य श्री राधाबल्लभलाल जी
वृन्दावन

इक गहकी गुण गावति इक बहु नृत्य दिखावति ।
एक वारने लेत एक कुसुमनि वरषावति ।।६२।।

अति सोभित गहवर वन जहँ तहँ कुंजैं कमनी ।
फूल बन्यौं चहुँ ओर परम सोभित जिहिं अवनी ।।६३।।

श्रीराधा हरि चरण कमल परसन हिस सरसति ।
अरुण उदय के भये कोटि विधि शोभा दरसति ।।६४।।

तहाँ गवनी श्रीप्रिया लाल अति रसिक पुरन्दर ।
मनौं छवि जाल मराल रहे भुज अंस अंस धर ।।६५।।

गज करनी ज्यों डोलनि अति रस मत्त कलोलनि ।
ललित लतनि के बीच ठठुकि रहैं उरझि निचोलनि ।।६६।।

झमकि कुंज दुरि जात गात सांवल गौरंगी ।
रस चरितन के ऐन कुशल कल केलि अनंगी ।।६७।।

पाछे लगि चलि गई निबिड कानन के माँहीं ।
शनै शनै पग धरति करति नूपुर धुनि नाहीं ।।६८।।

लतन ओट ह्वै रहत लडै़ती प्रीतम आछैं ।
सखी आगे बढ़िजाति देत वे तारी पाछैं ।।६९।।

तबहि चौगुनी चोंप होति सजनिनु के मन में ।
चतुर चौंकि सब फिरति निहारति नीकें रीति बन में।।७०।।

मंदिर लता अशोक प्रवेश न किरिन सूर्य शसि ।
पारिजात तरु साखनि में रहीं ललित रीति गसि ।।७१।।

तिन में परम उदोति उभय विधु वदन कियौ है ।
यह लक्षण अनुमान सहचरिनु जानि लियौ है ।।७२।।

देखि मधुर कछु हँसी लसी इहि विधि अलबेली ।
मनहुँ चन्द चय जोति दसन कोंधनि पग पेली ।।७३।।

www.RadhaVallabhMandir.com

कछु जँभानि ऐंडानि कछू भृकुटी छबि मटकी ।
कुँवरि डारि गहि लटकी शोभा पिय मन अटकी ।।७४।।

कछु सुथली लट खुली भई कछु दृगनि खुमारी ।
कछु यौवन मद वलकनि झलकनि मुख की भारी ।।७५।।

कछु मखि रेख सु ढरकनि कछु बेसरि की सरकनि ।
कछु कँचुकी बँद दरकनि कछु मोती लर लरकनि ।।७६।।

रूप रंग लावण्य कला चातुरी उजागर ।
यद्यपि शोभा आगर विथकित इहिं छवि नागर ।।७७।।

दरसि दरसि माधुरी लाल के नैननि सरसति ।
दहुँ दिशि हौं बलि गई जहाँ अतुलित छवि बरसति ।।७८।।

चटकति कलीं सुभलीं कमल जल थल अति विकसनि ।
अलि नादनि की भीर होत तितही तिन निकसनि ।।७९।।

पुनि कालिंदी कूल मरालनि सावक बोलत ।
अति प्रिय मधुरे बैन सुनत दोउ लटकत डोलत ।।८०।।

पुनि राते अति भये प्रात के सोभित बादर ।
नव पल्लव झल मलत निहारत कानन सादर ।।८१।।

पुनि लै पहुप सुगंध मधुर मारुत जब आई ।
परसि नासिका सुविधि दुहुंनि छकि मति बौराई ।।८२।।

गहकि गहकि तरु पांतिनु निकर कलापिनु टेरनि ।
निपट भुरहरी बिरियाँ बरषति सुख के ढेरनि ।।८३।।

वे कुसमनि के झबा झूंमि रहे रबिजा ओरी ।
मनों खुले छबि डबा मुदित लखि कुंवर किशोरी ।।८४।।

गंध अंध भये मधुप देत तिनकों छकझोरैं ।
मनहुं चाँदनी सुवन लरत तमसुत भुजजोरैं ।।८५।।

परी श्रवण पद आय कूक कोकिल की कमनी ।
चौंक उठी तब कुँवरि बहुरि ताहीं दिशि गवनी ।।८६।।

www.RadhaVallabhMandir.com

ललिता यह रूग कौन मोहि सो नाम बतावौ ।
बलि बलि लैचलि तहाँ रूप नयननि दरसावौ ।।८७।।

सखी कहै सुनि कुँवरि श्रवन लगै मीठी बानी ।
आगे गहवर कुंज जाइ जिनि मेरी रानी ।।८८।।

अधिक भुराई भरी सखी कौ चिवुक प्रलोवै ।
सजनी हँसि हँसि परत वदन तन पुनि पुनि जोवै ।।८९।।

हित सहचरि के अंश रही भुजा छबीली ।
बहुत होत आधीन परी अरवी अंरबीली ।।९०।।

सुनि सुनि भोरी बातनि रसिकलाल आनंदत ।
प्रिया ओट ह्वौ सैननि में सजनी पद बन्दत ।।९१।।

लै चलि वाही ठौर कहत हौं बलि बलि तेरी ।
कह धौं कौतुक होय बहुत अभिलाषा मेरी ।।९२।।

सखी तहाँ लै गई दुहुंनि मन की रुचि पाई ।
बैठी तरु की डारि कोकिला कुँवरि बताई ।।९३।।

तव प्यारी लखि हँसीं भयौ उर बड़ौ सँदेसौ ।
हे सजनी ये वचन दई रँग दीनौ कैसौ ।।९४।।

चतुर विशाखा श्याम ओर देखत मुसिकानी ।
विपुल हास कियौ प्रिया सखी के मन की जानी ।।९५।।

हँसति अली दिशि झुकी रवकि तिन भुज भरि लीनी ।
मनहुँ दामिनि निकर दमकि दशननि छबि दीनी ।।९६।।

न्यायरसिकमणि लाल फिरत जैसें कर चकरी ।
प्रिया रूप गुण मांहि सखी जिनकी मति जकरी ।।९७।।

यह मंगल कौ ध्यान तलप ते उठत केनि वन ।
छिनक बिसरि जिन जाय सदा सुधि करि मेरे मन ।।९८।।

मंगल युगल विनोद मोद सो सहचरि पायौ ।
श्री हरिवंश प्रसाद कछुक मैं वरणि सुनायौ ।।९९।।

www.RadhaVallabhMandir.com

ठारहसौ गतभयौ वर्ष वारहौं प्रगट जब ।
पूस सुदी पुनि तीज भयौ पूरन प्रबन्ध तब ।।१००।।

पठन श्रवण मंगल यश राधा रसिक बिहारी ।
वृन्दावन हित रूप भक्ति सरसै हिय भारी ।।१०१।।

परम आराध्य श्री राधाबल्लभलाल जी
वृन्दावन